International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 3, May-June, 2025

उच्च चुनौतीपूर्ण व्यवहार वाले बच्चों का अध्ययन करने के लिए उनके तुलनात्मक कम चुनौतीपूर्ण व्यवहार समकक्षों की तुलना में कम आत्म-नियंत्रण का अध्ययन

अभिलाष कुमार जैन[1], डॉ. नीलम वर्मा[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर
[2]प्रोफेसर, सनराइज यूनिवर्सिटी अलवर

सारांश

बच्चे के दुनिया में प्रवेश करने से बहुत पहले बच्चे की वृद्धि और विकास एक सतत चरण है। जैसे–जैसे बच्चा परिपक्व होता है और बाहरी संसाधनों के साथ संचार करता है, वैसे–वैसे आचरण विकसित होता है। और विकासात्मक गतिविधियों में उनके देखभालकर्ताओं द्वारा कड़ी निगरानी की जाती है, जो माता–पिता और प्रशिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण लक्ष्य हैं। 1980 के दशक के अंत और 1990 के दशक की शुरुआत में काउंसिल फॉर एक्सेप्शनल चिल्ड्रन ने आत्मकेंद्रित और विकासात्मक सिज़ोफ्रेनिया के लिए 'भावनात्मक या सहवर्ती विकार' शब्द के गंभीर भावनात्मक गड़बड़ी के बजाय अनुकूलन की वकालत की। फिर भी, इसमें आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को शामिल नहीं किया गया है यदि वे भावनात्मक रूप से गंभीर रूप से प्रभावित नहीं हैं। प्रभावशाली लेखकों द्वारा 'चुनौती' शब्द को 'अनुचित' या 'समस्या' के स्थान पर पसंद किया गया। यह शब्द आचरण की जटिलता को रेखांकित करता है। समस्याएँ अक्सर खुद को या दूसरों को चोट पहुँचाती हैं, भौतिक वातावरण को नुकसान पहुँचाती हैं, नए कौशल में बाधा डालती हैं या शिक्षार्थी को सामाजिक रूप से अलग कर देती हैं। स्मिथ और फॉक्स (2003) ने सुझाव दिया कि सभी दोहराए जाने वाले व्यवहार पैटर्न या व्यवहार की धारणाएं, जो इष्टतम सीखने या साथियों और वयस्कों के साथ सामाजिक संबंधों में शामिल होने में बाधा डालती हैं या जोखिम में हैं, उन्हें चुनौतीपूर्ण व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्दः दुनिया, भावनात्मक, सामाजिक, विकासात्मक

परिचय

किशोरावस्था के प्रारंभिक वर्ष सामाजिक और भावनात्मक सहायता के विस्तार के लिए परिवर्तनकारी और महत्वपूर्ण होते हैं जो मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। यह शिशु और वयस्कता के बीच का संक्रमणकालीन चरण है, जो भावनात्मक, जैविक और परिपक्व विकास की उच्च दरों द्वारा चिह्नित है। भारत 243 मिलियन किशोरों का घर है, जो इसे दुनिया भर में सबसे बड़ी आबादी वाला देश बनाता है।

किशोरावस्था के दौरान कुछ समस्याग्रस्त व्यवहार हो सकते हैं जो समायोजन की कठिनाई का कारण बनते हैं। कुछ सामान्य लक्षण हैंः गुस्सा, साथियों से झगड़ा, धोखा, झूठ बोलना, शारीरिक क्रूरता, अवज्ञा आदि। हालाँकि कभी–कभी ये विशेषताएँ परिपक्वता के साथ कम हो जाती हैं, लेकिन कभी–कभी माता–पिता की अनदेखी इन बच्चों को अंधेरे रास्तों पर ले जा सकती है, जो वयस्कों के साथ समायोजन की समस्याओं, शैक्षणिक विफलता से लेकर अपराधी व्यवहार और आपराधिक गतिविधि तक होती है। छोटे बच्चों के माता–पिता अक्सर किसी बड़े विश्लेषण, जैसे व्यवहार संबंधी मुद्दों के चेतावनी संकेतों को अनदेखा कर देते हैं, यह मानते हुए कि बच्चे का

व्यवहार सामान्य है और वे गलत कामों को पहचानने में असमर्थ हैं। यह अज्ञानता अक्सर इन बच्चों को अंधेरे रास्तों पर ले जाती है, जैसे कि अपराधी व्यवहार, शैक्षणिक विफलता और आपराधिक संलिप्तता। भारत में 10 से 24 वर्ष की आयु के युवा एक मूल्यवान संसाधन हैं जो विकास और वृद्धि द्वारा चिह्नित हैं। हालाँकि, यह एक संवेदनशील समय भी है जो अक्सर कई आंतरिक और बाहरी चर से प्रभावित होता है जो उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा पर प्रभाव डालते हैं। नीति निर्माताओं और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों को स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले व्यवहार और स्थितियों को संबोधित करने के लिए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए जो लगभग 10–30% युवाओं को प्रभावित करते हैं। अनुमान है कि 10 से 24 वर्ष की आयु के बीच 2.6 मिलियन युवा हर साल मर जाते हैं, और युवाओं का एक बड़ा प्रतिशत बीमारियों और "व्यवहार" से ग्रस्त है जो उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने से रोकता है (सिंह एट अल., 2014)। 2018 में द इकोनॉमिक टाइम्स में प्रकाशित एक सर्वेक्षण के अनुसार, 4 से 16 वर्ष की आयु के बीच के 13% भारतीय छात्रों को मानसिक रोग हैं, 20% में मानसिक स्वास्थ्य के लक्षण हैं, और 2–5% में ऑटिज्म या बाइपोलर डिसऑर्डर जैसी गंभीर स्थितियाँ हैं। 10 से 19 वर्ष की आयु के बीच की आबादी का छठा हिस्सा अवसाद से पीड़ित है, और सभी मानसिक स्वास्थ्य संबंधी आधे से अधिक चिंताएँ 15 वर्ष की आयु से पहले शुरू होती हैं। इसके अतिरिक्त, दुनिया भर में सभी बीमारियों और चोटों का 16% मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से संबंधित है।

एक बच्चे के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और मनोदैहिक क्षेत्र, साथ ही साथ अन्य मनोसामाजिक चर जो अक्सर इन श्रेणियों से जुड़े होते हैं, उन सभी को समझना चाहिए ताकि बच्चों के सामने आने वाली विभिन्न प्रारंभिक प्रतिकूल घटनाओं को पहचाना जा सके। कार्यकारी शिथिलता, संज्ञानात्मक भावनात्मक विकृति और युवाओं में शत्रुता को समझना इसका परिणाम हो सकता है। बच्चे का मानसिक स्वास्थ्य हमेशा बदलती दुनिया में सद्भाव से रहने की उनकी क्षमता के लिए मौलिक है। बच्चों का स्वास्थ्य राष्ट्रीय विकास की नींव है। जब उसके बच्चों की उपेक्षा की जाती है तो समुदाय की आगे बढ़ने की क्षमता बाधित होती है।

यूनिसेफ ने पूरे बच्चे के विचार पर बहुत जोर दिया है, जो यह सुझाव देता है कि चूंकि बच्चे समाज के सबसे कमजोर सदस्य हैं, इसलिए उनके स्वास्थ्य का समर्थन करना अनिवार्य है। युवा व्यक्तियों के लिए वास्तविक, कठिन और महंगी मानसिक, भावनात्मक और व्यवहार संबंधी समस्याओं का अनुभव करना संभव है, और अगर उन्हें अनदेखा किया जाता है, तो ये मुद्दे अक्सर उन विकारों के विकास का कारण बनते हैं जो बच्चों, उनके परिवारों, समुदायों और स्कूलों के लिए तनाव का कारण बनते हैं। उपलब्ध महामारी विज्ञान के अल्प आँकड़े बताते हैं कि दुनिया भर में 12–51% बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य विकार हैं, औसतन 29%। इसके बावजूद, बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति का सटीक आकलन प्राप्त करना बेहद मुश्किल है।

अध्ययन की आवश्यकता:
इस अध्ययन का उद्देश्य है विवादित व्यवहार गंभीर समस्या व्यवहार का एक वैश्विक वर्णन है, जिसमें शारीरिक आक्रामकता, आत्म–चोट या संपत्ति का विनाश शामिल है। चुनौती शब्द पिछले कुछ वर्षों में दर्शाता है कि कुछ गतिविधियाँ शिक्षकों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए चिंता का विषय हैं। जो लोग इन व्यवहारों को प्रदर्शित करते हैं वे हल करने में कोई समस्या नहीं हैं। व्यवहार इस बात का संकेत है कि कुछ काम नहीं कर रहा है, कि कुछ को असंतुष्ट होने की आवश्यकता है या संचार समस्या मौजूद है।

संक्षेप में, यह इंगित करता है कि कुछ गलत हो रहा है और ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो कुछ गलत करता है और कुछ को रोकना होगा। इसलिए 'विवादास्पद कार्रवाइयों' की परिभाषा को किसी व्यक्ति की संस्कृति के संदर्भ में विचलित माना जाता है, क्योंकि यह व्यवहारों की संख्या को संदर्भित करता है, अक्सर एक से अधिक का जिक्र करता है। जब कोई छात्र कठिन व्यवहार दिखाना शुरू करता है तो कक्षा का वातावरण महत्वपूर्ण रूप से बदल जाता है। शिक्षक कठिन व्यवहार वाले छात्रों का कई बार और ऊर्जा का उपयोग करता है, जो बदले में सभी छात्रों के शैक्षणिक अनुभव की गुणवत्ता को नष्ट कर देता है।

विद्यालय में चुनौतीपूर्ण व्यवहार में वह व्यवहार शामिल है जोः

- विद्यार्थी के अपने और या अन्य विद्यार्थियों के सीखने में हस्तक्षेप करता है।
- स्कूल के दिन–प्रतिदिन के कामकाज को बाधित करता है।
- एक अवधि, आवृत्ति, तीव्रता या दृढ़ता है जो स्कूल द्वारा सहन की जाने वाली सामान्य सीमा से परे है; और
- विद्यार्थियों के दुर्व्यवहार को संबोधित करने के लिए स्कूल द्वारा उपयोग किए जाने वाले हस्तक्षेपों की सामान्य श्रेणी के प्रति उत्तरदायी होने की संभावना कम है।

अध्ययन के उद्देश्य
अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैंः

1. बच्चों के चयनित समूहों में व्यक्तित्व कारकों का निर्धारण करना।
2. उच्च चुनौतीपूर्ण व्यवहार वाले बच्चों का अध्ययन करने के लिए उनके तुलनात्मक कम चुनौतीपूर्ण व्यवहार समकक्षों की तुलना में कम आत्म–नियंत्रण का अध्ययन करना।

साहित्य की समीक्षा
साहू, भार्गव, सागर और मेहता (2022) द्वारा उनके द्वारा विकसित गृह–आधारित हस्तक्षेप के प्रभाव में विशिष्ट अधिगम कठिनाइयों (आयु सीमा सात से बारह वर्ष) से पीड़ित बच्चों पर एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के लिए फोकस समूह विधि का उपयोग किया गया जो गुणात्मक शोध पद्धति का एक प्रकार है। सामान्य और विशिष्ट अधिगम विकार से पीड़ित बच्चों को उनके माता–पिता और शिक्षकों के साथ केंद्रित समूह चर्चा में शामिल होने के लिए ले जाया गया। कुल 22 गहन साक्षात्कार आयोजित किए गए। एकत्रित सामग्री की व्याख्या के लिए विषयगत विश्लेषण का उपयोग किया गया। गृह–आधारित हस्तक्षेप कार्यक्रम को मनोशिक्षा, अन्य अधिगम, संज्ञानात्मक और सामाजिक रणनीतियों के साथ–साथ व्यवहार तकनीकों के अनुलग्नक में पेश किया गया था।

माता–पिता के प्रशिक्षण में देखभाल करने वालों को पढ़ना, लिखना या गणित कौशल सिखाना, बच्चे की उपस्थिति में या उसके बिना चिकित्सक का अवलोकन करना, चिकित्सक के सामने अभ्यास करना और अभ्यास के दौरान प्रतिक्रिया प्राप्त करना शामिल था। एक अन्य अध्ययन में, भार्गव, मेहता, साहू और सागर (2022) ने जांच की कि विशिष्ट सीखने की अक्षमता (ैव) के उच्च प्रसार के बावजूद, इस बोझ को कम करने के लिए किए गए उपाय पर्याप्त हैं या नहीं। इस उद्देश्य के लिए शोधकर्ताओं ने 7 से 12 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक गृह–आधारित हस्तक्षेप (भ्ठप) कार्यक्रम विकसित किया। गृह–आधारित हस्तक्षेप कार्यक्रम में मनो–शिक्षा, सीखने के दृष्टिकोण, संज्ञानात्मक, सामाजिक और व्यवहारिक रणनीतियाँ और पालन–पोषण संबंधी युक्तियाँ शामिल हैं। गृह–आधारित हस्तक्षेप छह महीने तक चला और इसमें 14 अभिभावक शिक्षा सत्र शामिल थे, जिनमें से प्रत्येक 45 से 60 मिनट तक चलता था। अभिभावक प्रशिक्षण में चार चरण शामिल थेः () माता–पिता या देखभाल करने वालों को पढ़ने, लिखने या गणित की रणनीतियाँ समझाना; (इ) बच्चे की उपस्थिति में या उसके बिना और माता–पिता की देखरेख में रणनीतियों को लागू करना; (ब) शोधकर्ता/चिकित्सक के सामने रणनीतियों का पूर्वाभ्यास करना; और (क) शोधकर्ता/चिकित्सक को माता–पिता के अभ्यास का निरीक्षण करने और आवश्यकतानुसार समायोजित करने की अनुमति देना।

राजकुमार और अब्राहम (2022) ने विशिष्ट अधिगम अक्षमता (एसएलडी) वाले किशोरों में संज्ञानात्मक शैली और कार्यशील स्मृति की जांच की। उन्होंने भारत के बैंगलोर और त्रिशूर जिलों के तीस किशोरों (एसएलडी से पीड़ित) की तुलना तीस आयु–समरूप सामान्य साथियों (एसएलडी के बिना) से की। इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने प्रासंगिक डेटा के संग्रह के लिए निगम नेस्टेड फिगर्स टेस्ट, (भारतीय अनुकूलन) और बच्चों के लिए वेचस्लर इंटेलिजेंस स्केल का उपयोग किया। इस अध्ययन में, यह पाया गया कि खराब कार्यशील स्मृति दिखाना एसएलडी

से पीड़ित किशोरों में प्रमुख विशेषताओं में से एक है। इस अध्ययन के परिणामों से पता चला कि कार्यशील स्मृति के प्रदर्शन के साथ संज्ञानात्मक शैली का संबंध महत्वपूर्ण नहीं है। अध्ययन से पता चलता है कि अधिगम अक्षमता वाले किशोरों में कार्यशील स्मृति क्षमता और संज्ञानात्मक शैली को बेहतर बनाने के लिए संज्ञानात्मक हस्तक्षेप विकसित करने की आवश्यकता है ताकि उन्हें जीवन के सभी क्षेत्रों में बेहतर ढंग से कार्य करने में मदद मिल सके।

शोध पद्धति

विश्लेषण का उद्देश्य अध्ययन में डेटा के सार को परिभाषित करना होगा। डेटा की प्रकृति को देखते हुए, वर्तमान में चल रहे कार्य में गुणात्मक सह मात्रात्मक पहलू होंगे, लेकिन मुख्य रूप से पहलू में मात्रात्मकता होगी, क्योंकि इस विश्लेषण के अधिकांश निष्कर्ष मात्रात्मक उपायों पर केंद्रित होंगे। शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या के परिणामों पर अध्ययन किया जायेगा, जिसमें गुणात्मक विश्लेषण को भी परिभाषित किया जायेगा।

नमूना डिजाइन

शोध कार्य के कुछ मामलों में, पूरे शोध का विश्लेषण करना लगभग असंभव होगा; इसलिए शोध नमूने का उपयोग करना ही एकमात्र विकल्प होगा। वर्तमान शोध का एक ही उद्देश्य होगा, शोध कार्य के विश्लेषण का नमूना तय करने की प्रक्रिया, प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्कूली शिक्षण के स्तरों पर बच्चों के व्यवहार मे मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप के प्रभावो का अध्ययन से संबंधित होगा। विश्लेषण का नमूना तय करने की प्रक्रिया लक्षित आबादी के लगभग 300 माता–पिता का नमूना लेना है। माता–पिता जो अपने बच्चों के व्यवहार के बारे में शिकायत करेंगे, उन्हें साक्षात्कार देना होगा और उनके बच्चों के चुनौतीपूर्ण व्यवहार लक्षणों का आकलन करने के लिए स्क्रीनिंग टूल का प्रबंध करना होगा। दो सौ पचपन माता–पिता ने सीपीएनआई सबस्केल को पूरा किया, जिसने अंततः 60 स्कूली छात्रों का नमूना प्रदान किया, जो 'चुनौतीपूर्ण व्यवहार' के साथ प्रभाव के रूप में परिचालन रूप से परिभाषित करेंगे।

आंकड़ा संग्रहण

डेटा संग्रह अनुसंधान गतिविधियों के लिए पूर्ण और सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए स्रोतों से डेटा एकत्र करने और मापने का व्यवस्थित तरीका होगा। अध्ययन के सभी क्षेत्रों में तथ्य संग्रह घटक शरीर और सामाजिक विज्ञान, मानविकी और निगमों पर आधारित होगा। यह शोधकर्ता और विश्लेषकों द्वारा एकत्रित की जाने वाली जानकारी पर आधारित होगा।

जोकि शोध विषय वस्तु के दृष्टिकोण के विपरीत, सही और सच्चे क्रम को बनाए रखने का मूल्य उद्देश्य होगा। अनुसंधान की विश्वसनीयता को बनाए रखने और उत्कृष्ट परिणामों और उनके निष्कर्षों को सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान डेटा संग्रह आवश्यक होगा। अध्ययन के लक्ष्यों कों प्राप्त करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आपूर्ति डेटा संग्रह के मूल्यवान द्वारा होगा।

डेटा, परिणाम, व्याख्या और चर्चा

नियंत्रण और प्रयोग समूह के लिए विभिन्न चर के विरुद्ध प्रयोग से पहले डेटा की प्रस्तुति

आश्रित चर के अनुसार समूहों के बीच समरूपता का पता लगाने के लिए, शापिरो–विल्क परीक्षण और एनोवा किया गया।

तालिका 6.1: आश्रित चर के समरूपता परीक्षण की प्रस्तुति

चर	नियंत्रण समूह	शारीरिक गतिविधि समूह	व्यवहार चिकित्सा समूह	शारीरिक गतिविधि और व्यवहार चिकित्सा समूह	डब्ल्यू	पी–मूल्य
	माध्य और एसडी	**माध्य और एसडी**	**माध्य और एसडी**	**माध्य और एसडी**		
स्थिति चिंता	34.12 ±4.01	34.7±5.93	36.06±5.12	31.32±4.13	.94	.894
विशेषता चिंता	39.1±6.73	40.72±6.25	40.1±5.31	38.32±5.51	.97	.990
स्मृति अवधि	0.86±0.57	0.76±0.55	0.6±4.8	1.52±1.05	.79	.137
रैखिक धारणा	8.98±0.93	7.78±1.00	8.13±1.03	8.02±0.85	.87	.398
शैक्षणिक प्रदर्शन	245.86±88.40	237.12±74.41	171.32±56.00	205.3±88.80	.93	.805
भावनात्मक समस्या	4.66±1.34	5.06±1.90	5.06±1.21	5.52±1.30	.94	.891
आचरण समस्या	4.46±1.35	4.06±1.15	3.7±2.64	3.92±2.01	.93	.794
अति सक्रियता समस्या	4.7±1.85	3.66±1.44	3.5±1.80	3.26±1.61	.85	.305
सहकर्मी समस्या	2.66±1.53	3.3±1.75	3.72±1.57	3.46±1.67	.88	.493
कुल कठिनाई	16.5±3.24	16.1±3.33	16.26±4.95	16.26±2.40	.78	.119
समर्थक–सामाजिक व्यवहार	8±1.88	7.66±1.90	8.1±1.70	7.12±2.35	.95	.947

तालिका में, चर समरूप थे और सभी आश्रित चरों के लिए सभी नमूने नियंत्रण समूह और प्रायोगिक समूहों के बीच समान रूप से वितरित किए गए थे। इसलिए पैरामीट्रिक सांख्यिकी का उपयोग किया गया।

प्रत्येक चर के प्रभाव को देखने के लिए नियंत्रण और प्रयोग समूहों के विभिन्न चरों के विरुद्ध पूर्व और पश्चात डेटा की प्रस्तुतिः

शारीरिक गतिविधि समूहः

इस अनुभाग में, शारीरिक गतिविधि हस्तक्षेप के प्रभाव के साथ आश्रित चरों के विरुद्ध पूर्व–पश्चात डेटा के बीच तुलना नीचे प्रस्तुत की गई है और लाल रंग के साथ पी–मान एक गैर–महत्वपूर्ण मूल्य को दर्शाता है।

तालिका–6.2: शारीरिक गतिविधि समूह (प्रायोगिक समूह) की स्थिति चिंता के पूर्व और पश्चात परीक्षण के बीच तुलना

चिंता						
टेस्ट	**N**	**माध्य**	**मानक विचलन**	**Df**	**टी–मान**	**पी–मूल्य**
प्री–टेस्ट	300	34.7	±5.8	299	-3.098	<.001
पोस्ट–टेस्ट		28.82	±4.2			

'तालिका मान = 2.14 'महत्व स्तर 0.05 पर

तालिका में पूर्व–परीक्षण माध्य और मानक विचलन स्कोर 34.7 और 'ं5.8 के रूप में प्रदर्शित किया गया है, हालांकि पश्चात–परीक्षण क्रमशः 28.82 और 'ं4.2 था, जिसने संकेत दिया कि हस्तक्षेप कार्यक्रम ने विषयों को आशंका की भावना से उभरने में मदद की, गतिविधियाँ आत्म–सम्मान को प्रबंधित करने और बनाने में मदद करती हैं। चूँकि प्राप्त टी–मान (–3.098) तालिका मान (2.14) से अधिक है और पी–मान महत्व स्तर से कम है, इसलिए इसे महत्वपूर्ण माना गया, शून्य परिकल्पना को खारिज कर दिया गया। यह दर्शाता है कि शारीरिक गतिविधि हस्तक्षेप लड़कों की चिंताको कम करने में महत्वपूर्ण था।

तालिका–6.3: शारीरिक गतिविधि समूह (प्रायोगिक समूह) के लक्षण चिंता के पूर्व और बाद के परीक्षण के बीच तुलना

लक्षण चिंता						
टेस्ट	**N**	**माध्य**	**मानक विचलन**	**Df**	**टी–मान**	**पी–मूल्य**
प्री–टेस्ट	300	40.6	±6.2	299	-5.75	<.001
पोस्ट–टेस्ट		32.2	±4.2			

'तालिका मान = 2.14 'महत्व स्तर 0.05 पर

तालिका में पूर्व–परीक्षण माध्य और मानक विचलन स्कोर 40.6 और 'ं6.2 के रूप में प्रदर्शित किया गया है, हालांकि पोस्ट–टेस्ट क्रमशः 32.2 और 'ं4.2 था, जिसने संकेत दिया कि कार्यक्रमों ने स्थिर प्रवृत्ति, सोच पैटर्न खरीदा, सकारात्मकता प्रदान करने में मदद की, शारीरिक गतिविधि में भागीदारी के माध्यम से उनके व्यक्तित्व आयाम को बदल दिया। चूंकि प्राप्त टी–वैल्यू (–5.75) तालिका मान (2.14) से अधिक है और पी–वैल्यू महत्व स्तर से कम है, इसलिए इसे महत्वपूर्ण माना गया, शून्य परिकल्पना को खारिज कर दिया गया।

तालिका–6.4: शारीरिक गतिविधि समूह (प्रायोगिक समूह) के स्मृति अवधिके प्री और पोस्ट–टेस्ट के बीच तुलना

स्मृति अवधि						
टेस्ट	**N**	**माध्य**	**मानक विचलन**	**Df**	**टी–मान**	**पी–मूल्य**
प्री–टेस्ट	300	0.7	±0.5	299	-6.0	<.001
पोस्ट–टेस्ट		2.1	±0.8			

'तालिका मान = 2.14 'महत्व स्तर 0.05 पर

तालिका में पूर्व–परीक्षण माध्य और मानक विचलन स्कोर 0.7 और ँ0.5 के रूप में प्रदर्शित किया गया है, हालांकि पश्चात–परीक्षण क्रमशः 2.1 और ँ0.8 था, जिसने संकेत दिया कि हस्तक्षेप कार्यक्रम ने विषयों को ध्यान देने, निर्देशों का पालन करने, होमवर्क पूरा करने में सहायता की। चूँकि प्राप्त ज–मान (–6.0) तालिका मान (2.14) से अधिक है और च–मान महत्व स्तर से कम है, इसलिए इसे महत्वपूर्ण माना गया, शून्य परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया गया। यह दर्शाता है कि हस्तक्षेप ने लड़कों के बीच स्मृति अवधि पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

तालिका–6.5: शारीरिक गतिविधि समूह (प्रायोगिक समूह) के रैखिक बोध के पूर्व और पश्चात परीक्षण के बीच तुलना

रेखीय बोध						
टेस्ट	**N**	**माध्य**	**मानक विचलन**	**Df**	**टी–मान**	**पी–मूल्य**
प्री–टेस्ट	300	7.7	±1	299	6.2	<.001
पोस्ट–टेस्ट		9.5	±0.5			

'तालिका मान=2.14 'महत्व स्तर 0.05 पर

तालिका में पूर्व–परीक्षण माध्य और मानक विचलन स्कोर 7.7 और ँ1 के रूप में प्रदर्शित किया गया है, हालांकि पश्चात–परीक्षण क्रमशः 9.5 और ँ0.5 था। चूंकि प्राप्त टी–मान (6.2) तालिका मान (2.14) से अधिक है और पी–मान महत्व स्तर से कम है, इसलिए इसे महत्वपूर्ण माना गया, जिससे शून्य परिकल्पना का खंडन हुआ। यह दर्शाता है कि शारीरिक गतिविधि के मॉड्यूल ने लड़कों की रैखिक धारणा में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

निष्कर्ष

स्कूली छात्रों के बीच व्यवहार संबंधी समस्याओं, उसके प्रभाव और संबंधित मुद्दों की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। एक बच्चे की व्यवहार संबंधी समस्याएं वे व्यवहार हैं जो उनके समाजीकरण प्रक्रिया, शैक्षणिक उपलब्धि, तथा संज्ञानात्मक (सीखने) गतिविधियों, तथा उनके जीवन के अन्य क्षेत्रों में समस्याएं उत्पन्न करते हैं या उत्पन्न करने की अपेक्षा की जाती है। कक्षा में पाठ्यक्रम और अनुशासन बहुत प्रभावित और बाधित होते हैं। प्रत्येक बच्चा अपने विकास के दौरान किसी न किसी समय या कई बिंदुओं पर किसी न किसी प्रकार की व्यवहार संबंधी समस्या प्रदर्शित करता है। बच्चों और युवाओं के लिए गतिविधियों में भागीदारी के प्रभाव सीधे तौर पर अच्छे स्वास्थ्य से जुड़े होते हैं और जुड़ाव दीर्घकालिक द्वितीयक प्रभावों के साथ एकजुटता प्रदान करता है; किशोरावस्था में सक्रिय जीवनशैली वयस्क होने पर अधिक सक्रिय जीवनशैली को जन्म देती है। चिकित्सीय हस्तक्षेप किसी ऐसे व्यक्ति की भलाई को बढ़ाने का एक प्रयास है जिसे या तो सहायता की आवश्यकता है, लेकिन वह इसे अस्वीकार कर रहा है या सहायता मांगने या स्वीकार करने में असमर्थ है। स्थिति के आधार पर यह व्यक्तियों, शिक्षकों, अभिभावकों या संगठनों द्वारा किया जा सकता है और शिक्षक हस्तक्षेपों का नेतृत्व या संचालन कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन. (1994). मानसिक विकारों का नैदानिक और सांख्यिकीय मैनुअल. (चौथा संस्करण) वाशिंगटन. डी.सी. अमेरिकन साइकियाट्रिक एसोसिएशन.

[2]. बैरो, एच.एम. (1988). मनुष्य और आंदोलनः शारीरिक शिक्षा के सिद्धांत (4). ली और फ़ेबिगर, यू.एस., 10–0812111494, 13–378–0812111491.

[3]. बंडुरा, अल्बर्ट (1969). व्यवहार संशोधन के सिद्धांत. अंतर्राष्ट्रीय मनोचिकित्सा संस्थान, ई–बुक 2019

[4]. बैरो, एच.एम. (1979). शारीरिक शिक्षा में मापन के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण (3). ली और फ़ेबिगर
[5]. बीयर, एम., लॉरेंस, पी.आर., मिल्स, डी.क्यू. (1984). मानव संपत्ति का प्रबंधनः हार्वर्ड बिजनेस स्कूल का अभूतपूर्व कार्यक्रम.
[6]. डॉ. चक्रवर्ती समीरन (2009)। खेल प्रबंधन। खेल प्रकाशन, आईएसबीएन 81–89102– 48–6
[7]. गैरेट, हेनरी ई. (2011)। मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी। पैरागॉन इंटरनेशनल पब्लिशर्स, 81–89253–00–एक्स।
[8]. डॉ. कमलेश, एम.एल. (2009)। शैक्षिक खेल मनोविज्ञान। फ्रेंड्स पब्लिकेशन्स (भारत), आईएसबीएन 978–81–7216–210–3
[9]. जसवाल, डॉ. एस.एस., लेगा, डॉ. सुशील और गिरधर, डॉ. बलजीत (2012)। सामुदायिक खेल और मनोरंजक गतिविधियाँ। खेल शैक्षिक प्रौद्योगिकी, 978–81–89902–62–9।
[10]. मंगल, एस.के. (2015)। उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान (2)। पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, 978–81–203–2038–3।
[11]. मॉरिस लीसा, सैलीबैंक्स जो, विलिस केटी. (2013). युवाओं में खेल, शारीरिक गतिविधि और असामाजिक व्यवहार. ऑस्ट्रेलियाई अपराध विज्ञान संस्थान, आईएसएसएन 1326–6004
[12]. सिद्धू, कुलबीर सिंह. (2006). अनुसंधान शिक्षा की पद्धति. स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, आईएसबीएन 9788120701014
[13]. स्टर्नबर्ग रॉबर्ट जे., स्टर्नबर्ग करिन (2012, 2009). संज्ञानात्मक मनोविज्ञान (6वां संस्करण) वड्सवर्थ सेंगेज लर्निंग, आईएसबीएन–13: 978–1–111–34476–4, आईएसबीएन–10: 1–111– 34476–0
[14]. सिंह, प्रो. अजमेर, बैंस, डॉ. जगदीश, गिल, डॉ. जगतार सिंह और बराड़. डॉ. रछपाल सिंह (2012). शारीरिक शिक्षा के आवश्यक तत्व. कल्याणी पब्लिशर्स, 978–93–272–1816–9.
[15]. वर्मा, प्रकाश जे. (2009). खेल सांख्यिकी पर एक पाठ्य पुस्तक. खेल प्रकाशन, आईएसबीएन 978–81–7879–414–6
[16]. दीपक रामोत्रा, (2012). आचरण संबंधी विकार वाले बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याओं, शैक्षणिक उपलब्धि और समायोजन पर कला चिकित्सा और सामाजिक कौशल प्रशिक्षण का प्रभाव.
[17]. मालविका वी. मोकाशी, (2022). पूर्वस्कूली बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याओं के लिए माता–पिता की काउंसलिंग.
[18]. मंजीत कुमार, (2020). प्राथमिक विद्यालय के छात्रों की आत्म अवधारणा और सामाजिक क्षमता पर सामाजिक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव.
[19]. पायल डे, (2018). ऑटिज्म स्पेक्ट्रम विकार वाले व्यक्तियों में मन के सिद्धांत के भावात्मक घटक और भाषा के साथ इसके संबंध पर एक हस्तक्षेप कार्यक्रम विकसित करना
[20]. स्प्रीहा भट्टाचार्य, (2004)। आक्रामक भारतीय किशोरों पर तर्कसंगत भावनात्मक व्यवहार थेरेपी और सामाजिक कौशल प्रशिक्षण के एक चिकित्सीय पैकेज की प्रभावशीलता।
[21]. आइदा अल–अवामलेह, (2010)। किंडरगार्टन बच्चों के बीच मोटर क्षमताओं और सामाजिक व्यवहार पर शैक्षिक जिमनास्टिक कौशल का उपयोग करने की प्रभावशीलता।
[22]. अप्रैल मैरी थेलेन, (2012)। किंडरगार्टन छात्रों के संज्ञानात्मक और शैक्षणिक विकास पर नाटक का प्रभाव। यूएनआई स्कॉलर वर्क्स
[23]. ब्रायन स्कॉट फिलिप्स, (2013)। मिडिल स्कूल के छात्रों की अवधारणा समझ और आलोचनात्मक सोच कौशल पर रोल–प्ले के प्रभाव।
[24]. जेसिका गिसेज, (2018)। शारीरिक शिक्षा/शारीरिक गतिविधि वातावरण में ध्यान घाटे की सक्रियता विकार (एडीएचडी) वाले बच्चेः मेटा–विश्लेषण।
[25]. आर. सौम्या, (2011). स्कूली बच्चों में व्यवहार संबंधी समस्याओं पर अभिभावक–बाल संपर्क चिकित्सा की प्रभावशीलता।